हिन्दू और जात-पात

लेखक :—

सन्तराम, बी. ए.

हिन्दू और जात-पात

लेखक :—सन्तराम, बी. ए.

अस्पृश्यता हिन्दू समाज का ही नहीं, समूचे भारत राष्ट्र का कलंक है, इसने करोड़ों मनुष्य प्राणियों से मानवी प्रतिष्ठा छीन कर उनका जीवन दूभर बना दिया है। इसीके दुःख से करोड़ों हिन्दू मुसलमान और ईसाई बनने के लिये विवश हुए। इसी का दुष्परिणाम भारत की सहस्रों वर्ष की विदेशियों की दासता और देशका विभाजन हुआ।

इस अस्पृश्यता की जननी वर्ण-व्यवस्था अर्थात् जन्म से ही किसी को ऊँचा और किसी को नीचा समझना है। इस जात-पात के कारण प्रत्येक हिन्दू दूसरे हिन्दू के लिये अछूत है। अन्तर केवल अछूतपन के अंश में है—कोई कम अछूत है और कोई ज्यादा। एक के हाथ का बना भोजन तो आप लेते है परंतु उसके साथ बेटी-व्यवहार नहीं कर सकते। दूसरे को आप स्पर्श तो कर सकते है, परन्तु उसका भोजन नहीं कर सकते। इनके आगे वह हिन्दू आता है। जिसके हाथ का भोजन खाना या पानी पीना तो दूर, जिसे छू जाने से ही आप अपने को अपवित्र मानने लगते हैं। तथाकथित अछूत जातियों का कोई व्यक्ति कितना ही विद्वान, कितना ही धनी और कितना ही सच्चरित्र क्यों न हो। उस पर से नीचता और अस्पृश्यता का कलंक नही मिटता। हिन्दू समाज में जो प्रतिष्ठा और संमान एक दरिद्र, अशिक्षित और मद्यप ब्राम्हण का है वह एक सम्पन्न, सुशिक्षित और सच्चरित्र चमार या भंगी का नहीं। रामचरित-मानस के रचयिता राम-भक्त तुलसीदास जी कह गए हैं :—

पूजिए विप्र शील गुण हीना।
शूद्र न गुण गण ज्ञान प्रवीना॥

जिस समाजका ऐसा सिद्धान्त हो उस में कौन तथाकथित अछूत रहना पसंद करेगा। मुझे अभी-अभी एक चिठ्ठी प्राप्त हुई है। उसे मैं आगे ज्यों की त्यों उद्धृत कर रहा हूँ। यह हिन्दू समाजका मूंह बोलता चित्र है।

वैद्य सन्त परमानन्द निर्वाणी।
उत्तम भवन, वाड़मेर, (राजस्थान)
२६ फर्वरी, १९६७।

आदरणीय पण्डितवर्य, विद्या के समुद्र अछूत शुद्धि के लक्ष्य में लवलीन, श्रेष्ठ गुण-सम्पन्न, श्री सन्तराम जी महोदय, आप चिरंजीवी भवतु।

आप योग्य को बाड़मेर नगर से वैद्य सन्त परमानन्द निर्वाणी का सादर नमस्ते !
मैंने तो आपके जात-पात तोड़क मंडल की चिरकाल से तारीफ सुनी । विक्रम संवत्
१६८१ में जब मैं कराची में था, तब से मैं देखनेकी इच्छा करता रहा, पर मेरा आना
नहीं हुआ । अब आप का श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन के शब्दों से विशेष ध्यान आया
कि आप तो कमर कस कर अछूतपन के गढ़ को गिराने के लिये अपनी विद्वत्ता के
शक्तिशाली शब्दों रूपी सुरंगें बिछा रहे हैं, तो मैं भी इस कर्तव्य का इच्छुक होकर
बहुत दिन भटकता रहा । मैं छोटी आयु में अपनी जाति से निकलकर विद्वानों के संग
में रहा । चालीसवें वर्ष में शादी की । दो लडके और दो लडकियां सन्तान हैं । एक लड़की
को हायर सेकण्डरी प्रशिक्षण बी. एस. टी. सी. करवाकर गर्ल्ज स्कूल, बाड़मेर में
अध्यापिका बनाई । छोटी लडकी हायर सेकण्डरी फाइनल में है । बड़ा लड़का प्रथम
वर्ष टी. डी. सी. सायंस बॉइलोजी, जोधपूर युनिवर्सिटी में है । छोटा लडका तीसरी में
है । मकान घर का है । रजिस्टर्ड चिकित्सक हूँ । मेरे विचार कट्टर आर्यसमाज के है ।
कोई व्यसन नहीं । घर सारा ही निर्व्यसनी है । चाय-शक्कर तक त्याज्य है । कट्टर
वैष्णव हूँ । मैंने बहुत आर्यसमाजी देखे । लेकिन अन्दर में जातीयता की बीमारी से
तन्दुरुस्त आज तक देखने में कोई नहीं आया । जोधपुर में गत वर्ष लडका रातानाडा
आर्यसमाज के मन्दि में किराये पर कमरा लेकर रहता था । वहाँ भी लोग जाति
पूछ-पूछ कर तंग करते थे । इस बीमारी से तंग होकर डाक्टर अम्बेडकर बौद्ध बना ।
मुझे भी लोग इतना ही तंग करते हैं । मेरा भी हिन्दुओं की छुआछूत बाबत घृणा है
मैं ऊब गया हूँ । अब मुझे भी कुछ बनना पडेगा । आप के दरबार की बहुत बडाइयाँ
सुनी है, तो आप अछूतपन का कलंक मिटाने के लिये कोई इलाज बताओगे । इस उद्देश्य
से पत्र लिख रहा हूँ । प्रत्युत्तर की इन्तजार में आशा रखकर बैठा हूँ ।

मैं अछूतों का गुरु हूँ । लोग जब देखते हैं तो ईर्ष्या के साथ ये शब्द बोलते
हैं कि तुम इतनी सफाई रखते हो, संयमी, चरित्रवान कितने ही आदर्श हो, व्यसनों से
भी अलग हो, रातका भोजन भी नहीं करते हो, बच्चे-बाल सब सुशिक्षित है, तो भी
क्या तुम सवर्ण हो गये ? मनु महाराज ने कहा है कि सात जन्मों सें शूद्र शुद्ध हो
सकता है । तुम एक ही जन्म में आशा रख बैठे । हिन्दुओं की बराबरी करते हो ।
मुझे इन शब्दों से अत्यंत घृणा होती है कि यह क्या धर्म जहाँ मानवता का महत्त्व ही
नहीं । तब कुछ बनने को तैयार हो जाता हूँ । लेकिन मेरा असूल रोकता है । तब तक
सब करूँगा जब तक आपका प्रत्युत्तर नहीं आता । और सुख ।

आपका
वैद्य सन्त परमानन्द निर्वाणी ।

जो सवर्ण हिन्दू कहा करते हैं कि अछूत लोग दरिद्रता के कारण मुसलमान और ईसाई बनते हैं उन्हें वैद्यजी के इस पत्र पर शान्त मन से, निष्पक्ष होकर विचार करना चाहिये। एक सुशिक्षित आत्मसंमानी मनुष्य को उसकी दरिद्रता उतनी नहीं चुभती जितना कि पग–पग पर होनेवाला उसका सामाजिक तिरस्कार। हिन्दू समाज की इसी बुराई से मुसलमान और ईसाई लाभ उठाकर अछूतों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। उपरिलिखित पत्र के थोडे ही दिन बाद मुझे मुसलमानों के अहमदिया मिरजाई संप्रदाय के एक प्रतिष्ठित प्रचारक श्रीअब्दुल अजीम का कादियाँ से पत्र मिला। उसका कुछ अंश आगे दिया जाता है।

"मुझे यह मालुम करके भी प्रसन्नता हुई है कि आप अछूत शूद्र हैं और सवर्ण हिन्दुओं में से नहीं हैं। अब मैं अपने विचार निडरतासे आपके सामने रखता हूँ। हमें इस्लाम और अहमदियत ने यह शिक्षा दी है कि सारी सृष्टि भगवान का परिवार है। मुसलमान का अर्थ शान्ति और रक्षा चाहनेवाला है और कोई मुसलमान उस समय तक मुसलमान कहलाने का अधिकारी नहीं है जब तक कि वह मानवता के नाते प्रत्येक जाति के प्रत्येक व्यक्ति से उसी प्रकार ही प्रेम व प्यार और मिलवर्तन न करे, जिस तरह वह अपनों के साथ करता है। मैंने जिस बात को अपने लिये अच्छा समझा है कि वह चीज मैं अछूतों के लिये आपकी सेवा में प्रस्तुत करता हूँ। मैं मानवता के नाते से ही अपने अछूत भाइयों को भी दूसरी बडी से बडी जातियों की तरह संमान और प्रतिष्ठा से देखने का न केवल इच्छुक हूँ वरन् भगवान से प्रार्थी भी हूँ। मैंने आपके लेख "प्रताप" में और ट्रेक्ट भी बडे ध्यान से पढे हैं। केवल इस परिणाम तक ही पहूँच सका हूँ कि आपको अपने इतिहास का बहुत कम ज्ञान है। इसी कारण थोडी सी ऊपरी बातों (कि हिन्दू अछूतों को अपना अंग समझें और इनसे रोटी-बेटी सम्बन्ध करें) के सिवा आपको अछूतोद्धार का और कोई काम दिखाई नहीं दे रहा। इसके साथ ही आप स्वयं मान भी रहे हैं कि हिन्दू कोई मजहब नहीं, वरन् एक ऐसा समाज या सोसायटी है जिसकी घुट्टी में ही दूसरों से घृणा और अपनी बडाई के सिवा और कुछ नहीं मिलाया गया। सब धर्म ईश्वरपूजा की शिक्षा देते और सृष्टि के साथ भलाई का उपदेश देते हैं। परन्तु हिन्दू एक जाति के रूप में सवर्णों को पूज्य और दूसरी सब जातियों को शूद्र, म्लेच्छ, घृणा–योग्य मानते हैं। इसके रहते भी आप उनसे यह आशा रख रहे हैं। कि वे शूद्रों को अपना अंग समझें और रोटी–बेटी का सम्बन्ध करें। आप कितने भोले मालूम होते हैं। क्या कभी पत्थर को भी जोकें लग सकती हैं ? आप तो उनसे बहुत बडी आशाएँ लगाए बैठे है, हालाँ की हिन्दू–नेता तो स्पष्ट रूप से इस बात को भी प्रकट कर रहे हैं कि वैदिक काल का सा हिन्दू-राज्य स्थापित करेंगे। इसमें सफलता की दशा में तो अछूत बेचारे सारी माँगते–माँगते आधीसे भी जायेंगे।

श्रीमान् जी, अपने किए का क्या इलाज? आप भाइयों ने हिन्दुओं को अब भी स्वयं ही अपने ऊपर स्वामी बना रक्खा है। इन्हें अपने कीमती वोट देकर बहुमत बना दिया है। अन्यथा सवर्ण हिन्दू किसी भी बड़े अल्पमत से अधिक नहीं हैं। आप स्वयं मानें या न मानें, अछूत हिंन्दू कदापी नहीं थे, वरन् इस देश के मूल निवासी और स्वामी थे, जिन्हें आर्यों ने मार–मार कर दबा लिया और प्रत्येक नीच से नीच सेवा ली गई। यहाँ तक कि उन्हें मानवता के क्षेत्र से भी बहिष्कृत ठहराकर उनका नाम स्थायी रूपसे अछूत रख दिया और उन्हें इसी दशा पर सदैव सन्तुष्ट रखने के लिये आवागमन का सिद्धान्त गढ़ लिया गया ताकि अछूत हिन्दुओं के अत्याचारों को अत्याचार न समझे, वरन् पिछले जन्म के कर्मो का फल मानकर अपनी बुरी दशा पर ही सन्तुष्ट रहें, और सवर्ण जातियों के सामने कभी सिर भी न उठा सकें। इस सचाई को केवल स्वर्गीय डॉ. अम्बेडकरजी ने ही अच्छी तरह समझा था और वे किसी मुल्य पर भी अछूतों के भाग्य को हिन्दुओं के साथ बाँधे रखने के पक्ष में नहीं थे। खेद है कि ऊनका जीवन समाप्त हो गया और अछूत अपने एकमात्र हमदर्द लीडर से वंचित हो गए। अब जो लिडर हैं वे सब आप ही की तरह के हैं जो चौर को मारने चाहते हैं, परन्तु चोर की माँ की छत्रछाया में रहने के अभिलाषी हैं। सत्रह करोड़ अछूत स्वयं एक प्रबल शक्ति हैं। यदि एक करोड़ से भी कम संख्या के सिक्ख अपने लिए सम्मान का स्थान प्राप्त कर सकते हैं, तो सत्रह करोड़ अछूत क्यों नहीं कर सकते? यदी अछुतों में कुछ भी आत्म–संमान का भाव है तो वे अपना भाग्य हिन्दुओं से सम्बद्ध रखने के स्थान में उनसे अलग होकर अपना भविष्य मध्य बना सकते हैं। अन्यथा अछूत को और कोई उपाय सफल सिद्ध नहीं हो सकता। मेरे विचार में जो अपमान सहस्त्रों वर्ष से अछूत उठा रहे हैं, पृथ्थी–तल पर आज तक किसी भी जाति ने नहीं उठाया होगा। यह सब कुछ लिडरशिप की कमजोरी के प्रताप से हुआ है। यदि अछूत अपने लिए को कोई प्रतिष्ठित स्थान चाहते हूँ तो अपने वोटों को इकठ्ठा करें और अपनी जाति के सिवा किसी को वोट न दें। एकता और संगठन उत्पन्न करें और पूरी कौम को एक मंच ईकठ्ठा करने का प्रयास करें। तो कोई कारण नहीं हैं कि वे अपने लिये संमान का स्थान प्राप्त न कर लें। वर्तमान दशा में अछूतों ने न केवल अपनी ही जाति पर अत्याचार ढा रक्खा है, वरन् वे एक मानवता की शत्रु जाति के अत्याचार के हाथ को लंबा करनेवाले और दूसरी अल्प संख्याओं पर भी उत्पीड़न और अत्याचार के जिम्मेदार ठहरते हैं। पर जब तक अछूत अपनी दशा को बदलने के लिए कोई कर्वट नहीं बदलेंगे, तब तक न केवल आप ही अत्याचार–पीडीत रहेंगे वरन् इनके कारण दूसरी अल्प संख्याएँ भी अत्याचार का शिकार बनी रहेंगी और कभी सुख का साँस न ले सकेंगी। बस मेरे प्यारे भाइयो, खुदा के लिये अपनी हैसियत बनाओ और न केवल स्वथं अपने उपर दया करो, वरन दूसरों पर भी

दया होने दो। खुदा करे कि मेरी यह सरासर हमदर्दी और नेकनियती से लिखी गई कुछ प्रार्थनाएँ मेरे अछूत भाइयों के काम आएँ और शायद इसी से मेरी भी मुक्ति हो जावे। आप यदी कष्ट करके सब अछूत नेताओं के पते भेजें तो में उनकी सेवा में यही विनती प्रस्तुत करूँगा।

आपका सेवक,
अब्दुल अजीम।

श्रीअब्दुल अजीम की अछूतों के प्रति समवेदना सराहनीय है। परन्तु कदाचित् उन्हें पता नहीं कि जन्ममूलक ऊँच–नीच का दुर्भाव हिन्दुओं में इतना गहरा घर कर बैठा है कि किसी हिन्दू के मुसलमान हो जाने पर भी वह पूरी तरह दूर नहीं होता। कोई सैयद किसी भंगी या चमार मुसलमान को लडकी देता नहीं देखा जाता। मुझे गोवा से पत्र आया कि वहाँ ब्राह्मण से ईसाई बने व्यक्ति को ही गिरजे का पादरी बनाया जाता है, भंगी से ईसाई बने व्यक्ति को नहीं। इसके अतिरिक्त एक और बुरी बात भी है जो हिन्दू मुसलमान हो जाता है वह भारत की भाषा, भारत की भूमि और भारत के महापुरुषों से प्रेम करना छोड देता है। वह दोनों शब्दों का अर्थ एक ही होने पर भी अपना नाम ईश्वरदास न रख कर अब्दुल अजीम रखता है। वह गंगा और यमुना की धरती से प्रेम तोड़ कर अरब की मरुभूमी को अपनी मातृभूमि समझने लगता है वह राम कृष्ण, भरत और भिम को अपना महापुरुष न मानकर दाऊद और सुलेमान, रुस्तम और असफऊयार जैसे विदेशी लोगों को ही अपना पूर्वज समझ कर पूजने लगता है। यह बात राष्टीय एकता के लिये हानिकारक है। अन्यथा कोई व्यक्ति घरमें कुरान पढे, नमाज पढे, ईन्जील पढे, गीता पढे, धम्मपद पढे, साकारवादी हो, निराकारवादी हो, मांसाहारी हो या शाकाहारी, राष्ट्र की दृष्टि से कोई कोई अन्तर नहीं पडता। हाँ, इन सब भारत–वासियों का आपस में गुण कर्म और रुचि के अनुसार रोटी–बेटी का व्यवहार होना आवश्यक है। हिन्दुओं में मूर्ति–पूजक हैं और निरामिष भोजी हैं तो मुसलमानों में भी कब्र–पूजकों और शाकाहारियों का अभाव नहीं। काश्मीर के शिआ मुसलमान किसी हिन्दू के हाथ का नहीं खाते। इस्लाम की समता और बन्धुता और इसाईयत का प्रेम और सेवाभाव सब हिन्दुओं के लिये ग्रहण करने योग्य है। हिन्दुओंकी धार्मिक उदारता–विश्वासके स्थान में आचार का महत्व – सामाजिक शान्ति के लिये मुसलमानों की साम्प्रदायिक संकीर्णता और असहिष्णुतासे कहीं अधिक वांछनीय है। हमें किसी साम्प्रदायिक दृष्टि से नहीं, मानवता की दृष्टि से ही अस्पृश्यता और उसकी जननी जात–पात को समाप्त करना है।

अछूतपन की जननी जात-पात है, जब तक जात – पात को जड़ से नहीं उखाडा जाता, अछूतपन दूर नहीं हो सकता। जो लोग कहा करते हैं कि अछूतों की आर्थिक दशा उन्नत कर देने

से अछूतपन दूर हो जायेगा, उनसे मेरा कहना है कि सब अछूतों को लिखा-पढ़ा कर सरकारी नौकरी देना संभव नहीं। जो भंगी या चमार सरकारी नौकर नहीं बन सकता वह अपनी आर्थिक दशा कैसे उन्नत कर सकेगा ? कोई भंगी जातिका व्यक्ति हलवाई, पंसारी, नानवाई, बजाज, अचार आदि की दूकान खोलकर धन नहीं कमा सकता. क्योंकि कोई भी हिन्दू उसकी दूकान से सौदा नहीं खरीदेगा। सुना है, गढ़वाल जैसे कई प्रदेशों में जब कोई अछूत जातिका मनुष्य किसी होटल में खाना खाता है तो उसे अपने जूठे बर्तन आप साफ करने पड़ते हैं। परन्तु जब वह मुसलमान या ईसाई बन जाता है तब होटेलवाला उसके जूठे बर्तन आप साफ करने लगता है। ऐसी दशा में कोन आत्मसंमानी अछूत हिन्दू रहना पसंद कर सकता है।

जो लोग पुनर्जन्म के आध्यात्मिक सिद्धांन्त की ओट लेकर कहते हैं कि अछूत अपने पूर्व जन्म के कुकर्मों के कारण नीच जातियों में उत्पन्न हुए हैं और अछूतोद्धार ईश्वर के काम में रुकावट डालकर पाप करना है; वे आवागमन के सिद्धांत को समझे ही नहीं। उनसे कोई पूछे, तुम जब बीमार होते हो तो दवा-दारु करके ईश्वरीय दण्ड से बचने की चेष्टा क्यों करते हो ? तुम्हें ईश्वर ने अंगरेजों का दास बनाया था, तुम दरिद्र-परिवार में उत्पन्न हुए थे, तुमने स्वतन्त्र या धनवान बननेकी कुचेष्टा क्यों की ? तुम अपने भाग्यपर सन्तुष्ट क्यों नहीं बैठे रहे? दुःखियों के दुःख को दूर करना, गिरे हुओं को उठाकर गले लगाना यही सच्ची प्रभु-भक्ति है। अपने को ऊँचा और पवित्र मानना और अपने जैसे दूसरे मनुष्य प्राणियों को नीच और पशु से भी बुरा समझना महापाप है। इसी महापाप का दण्ड हिन्दू सहस्रों वर्षो से भोगते आ रहे हैं। संसार के और किसी भाग में इस प्रकार का अछूतपन नहीं। क्या भगवानने भारत को ही अछूतोंका कारावास बनाया है ? दुःखकी बात यह है की जन्ममूलक ऊँच-नीच और अछूतपनकी भावना केवल सवर्ण हिन्दुओंमें ही नहीं। यह स्वयं तथाकथित अछूतों और शूद्रों के रक्तमें भी बुरी तरह समाई हैं। कोई चमार किसी भंगीको अपनी नहीं देगा। कोई बढ़ई किसी नाईके साथ बेटी-व्यवहार नहीं करता। इसका कारण कदाचित् यह है कि चमार डरता है कि मुझे तो पहलेही नीच समझा जाता है? भंगी के साथ बेटी-व्यवहार करनेसे हिन्दूसमाज की दृष्टिमें मैं और भी गिर जाऊँगा। यदि सवर्ण हिन्दू पहले आपसमें ही बेटी-व्यवहार आरम्भ करें तो शूद्रोंका भी यह डर दूर जाये। यहाँ तो अवस्था है कि यदि मालवीय ब्राह्मण मालवीय को छोड़कर किसी दूसरे ब्राह्मण के साथ भी बेटी-व्यवहार करता है तो मालवीय ब्राह्मण उसका बहिष्कार कर उसे जाति से बाहर निकाल देते हैं।

ब्राह्मणोंको कट्टर जातिवादी समझा जाता है। परन्तु हर्ष और सन्तोष की बात है कि स्वयं इन ब्राह्मणों में ही ऐसे साहसी जात-पात तोडक व्यक्ति प्रकट हो रहे हैं जिनकी टक्कर का सुधारक दूसरी जातियों में नहीं मिलता। अनेक ब्राह्मण सुशिक्षित लडकियों नें चमार युवकों के साथ विवाह किया है। विजयवाडा (आंध्र) के प्रसिद्ध प्रोफेसर श्रीरामचन्द्र राव ओराने अपनी पुत्री और पुत्र दोनोंका विवाह अछुतों में किया है। वे उच्च कोटिके ब्राह्मण हैं। मेरे अनेक ऐसे सुशिक्षित ब्राह्मण युवक प्रेमी हैं जो जात-पात को बिलकुल तिलांजलि दे चुके हैं। बंरहान इलाहाबादके श्रीत्रिभुवननाथ मंजुल, एम. ए. और नेवादा कालोनी, इलाहाबादके श्री श्रीराम मिश्र एम. ए. ऐसे ही दो नवयुवक हैं। तो हताश होने की आवश्यकता नहीं, जैसा कि समझा जाता है, यदि जात-पात ब्राह्मणों ने फैलाई है तो उसका नाश भी वही करने लगे हैं। श्री राज-गोपालाचार्य ब्राह्मण हैं। उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह महात्मा गांधीके पुत्र (बनिया) के साथ किया था। हमारे जात-पात तोडक मण्डल के प्रचारमन्त्री स्वर्गीय भूमानन्दजी जन्मके ब्राह्मण थे। परन्तु उन्होंने आत्मीय जनोंके विरोधकी परवाह न करके ब्राह्मण लडकीसे सगाई तोडकर एक अरोडा लडकी से विवाह किया था। स्वर्गीय पूज्य भाई परमानन्दजी मोहीयाल ब्राह्मण थे। परन्तु उन्हों ने हमारे मण्डलके प्रधानके रूपमें अपनी पुत्रीका विवाह एक खत्री लडके के साथ किया था।

सचाई यह है कि जात-पात या वर्ण व्यवस्था वैदिक धर्म में पीछेसे घुसी हुई एक बुराई है। देखिए महाभारत कहता है—

एकवर्णमिदं पूर्वं विश्वमासीद् युधिष्ठिर।
कर्मक्रियाविभेदेन चातुर्वर्ण्यं प्रतिष्ठितम्॥

अर्थात हे युधिष्ठिर, इस जगत में पहले एक ही वर्ण था। गुण कर्म के विभाग से पीछे चार वर्ण बनाए गये। वही महाभारत फिर कहता है—

न विशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्राह्ममिदं जगत्।
ब्रह्मणा पूर्वसृष्टं हि कर्मभिर्वर्णतां गतम्॥

अर्थात् वर्णों में कोई भी वर्ण विशेषता नहीं रखता क्योंकि यह सम्पूर्ण जगत् ब्रह्ममय है। पहले सबको ब्रह्मानेही उत्पन्न किया है।

वायुपुराण कहता है:—

सत् युग में वर्ण-भेद, कर्म-भेद और आश्रम-भेद न था। त्रेता युग में मनुष्यों की प्रकृतियाँ कुछ भिन्न-भिन्न होने लगीं। कर्म-वर्ण-आश्रम भेद आरम्भ हुए।

तदनुसार शान्त, शुष्मी, कर्मी और दुःखी ऐसे नाम पड़े। द्वापार और कलि में प्रकृति-भेद और भी अभिव्यक्त हुआ। तदनुसार क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र नाम पड़े।"

जो लोग चार वर्णों की बांट को ईश्वर-कृत मानकर जात-पात से चिमटे हुए हैं वे विष्णूपुराण (अंश ४-१-९ देखें; क्या कहता है। वहाँ साफ लिखा है कि गृत्समद के पुत्र शौनक ने चातुर्वर्ण्य व्यवस्था प्रचलित की।

आज के हिन्दू-समाजमें विभिन्न वर्णों और जातियों के लोग परस्पर रोटी-बेटी का व्यवहार नहीं करते। इससे उनका धर्म टूट जाता है और उनकी जाती चली जाती है। उस पुरातन काल में ऐसी बात न थी। व्यवसाय के कारण विभिन्न नामोंसे पुकारे जानेपर भी वे आपसमें बेटी-व्यवहार करते थे। ऐसे विवाहोंके बहुतसे उदाहरण आपको मेरी पुस्तक "हमारा समाज" (साधु आश्रम होशियारपुर द्वारा प्रकाशित, मूल्य चार रुपये में) मिल जायेंगे। यह बात नहीं कि ऊँचे वर्ण का पुरुष नीच वर्ण की स्त्री के साथ विवाह कर सकता था, वरन् नीच वर्ण का पुरुष भी उच्च वर्ण की स्त्री के साथ भी विवाह करता था। प्रमत्ता ब्राह्मणी का विवाह एक नाई के साथ हुआ। इनके पुत्र मातंग महामुनी थे—(महाभारत अनुशासन पर्व, अध्याय २७)। इसी प्रकार कर्दम ऋषि की कन्या अरुन्धती और वेश्या के पुत्र वशिष्ट मुनिका विवाह हुआ। इनके पुत्रका नाम शक्ति था, इनका विवाह चाण्डाल कन्या अदृश्यन्ती से हुआ। इनका पुत्र पाराशर था। देखिए, लिंगपूराण, पूर्वार्द्ध अध्याय ६३ और शिव-पुराण पूर्वार्द्ध खण्ड १, अध्याय १३। वर्ण-व्यवस्था आज के समाजवाद और साम्यवाद की तरह एक सामाजिक प्रयोग था, जो बहुत बुरी तरह असफल रहा; इसने तथाकथित अछूतों और शूद्रों का तो जीवन दूभर बना रक्खा ही है, इसने नारी जाति को भी अपमानित कर दिया है। बिरादरी में एक योग्य लड़का होता है। सभी उसे लड़की देना चाहते हैं। इससे लड़के की मिजाज बिगड़ जाती है। पहले तो लड़की को बिकनेवाली गाय-भैंस की तरह देखा जाता है। यदि देखकर इंकार कर दिया जाता है तो लड़कीपर बहु बुरा प्रभाव पड़ता है। दूसरे, लड़की के पिता से भारी दहेज माँगा जाता है। जिस मनुष्य की पाँच छः कन्याएँ हों, वह प्रत्येक के विवाह पर दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह सहस्र रुपया कहाँ से खर्च करे। जाति-बन्धन न हो तो किसी भी दूसरी जाति के योग्य लड़के से विवाह किया जा सकता है। इसी जाति-बन्धन के कारण अनेक पढ़ी लिखी, सुशील कन्याएँ जाति के भीतर अयोग्य और कदाचारी लड़कों के हाथ सौंप दी जाती हैं। इससे उनका दाम्पत्य जीवन दुःखमय हो जाता है। कई लड़कियाँ आत्महत्या कर लेतीं या विधर्मियों के साथ भागनेपर विवश हो जाती हैं।

यदि अन्तर्जातीय और अन्तर्प्रान्तीय विवाह हो तो भाषा और प्रान्तका भेद-भाव मिट कर एक सुदृढ़ भारतीय राष्ट्र बननेमें भी बड़ी सहायता मिल सकती हैं।

पाश्चात्य देशोंमेंभी भंगी, चमार, बढ़ई, नाई, कुम्हार, सुनार, जुलाहा आदि का कामकरनेवाले लोग हैं। पर वहाँ ऊँच-नीच का कोई भाव नहीं। सब लोग अपनी रुचि और स्थितीके अनुसार आपसमें बेटी-व्यवहार करते हैं? क्या वहाँ हिन्दुओंसे कम विद्वान्, योद्धा, राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक और शिल्पी हैं? रक्त की पवित्रता की झूठी डींग हिन्दुओं को ले डूबी है। समय के अनुसार अपनेको बदलनेमें ही बुद्धिमत्ता हैं, अन्यथा जात-पात जैसी युगबाह्य कुरीतियोंसे चिमटे रहने से हिन्दु धीरे-धीरे संसार से लुप्त हो जायेंगे। और कई पाकिस्तान और नागालैण्ड बननेकी नौबत आ जायेगी।

जात-पात का विष संप्रदाय और प्रांत को भी पार करके दूर तक पहुँच गया है। पंजाब का आर्यसमाजी खत्री किसी दूसरे सिक्ख खत्री को, या मध्यप्रदेश में बसनेवाले सनातनधर्मी खत्री को, भी लडकी देगा, परन्तु पंजाबमें बसनेवाले आर्य-समाजी बनिए को नहीं, चाहे वह कितनाही योग्य क्यों न हो। इसका दुष्परिणाम सर वम्फील्ड फुलर के शब्दोंमें, यह हुआ है कि हिन्दुओंकी जितनी जातियाँ और उपजातियाँ हैं, भारतमें उतने ही भिन्न-भिन्न राष्ट्र है। खान-पान और व्याह-शादी की दृष्टि से, इनका आपसमें उतना भी संबंध नहीं जितना चिडियाघर के पशु-पक्षियोंका आपस में होता है राष्ट्रीय एकता और संघटनका आधार समता, बन्धुता और स्वतंत्रता होता हैं। जात-पातकी भावना इन तीनों को नष्ट कर देती हैं। एक ब्राह्मण को जितना दूसरा ब्राह्मण प्रिय और अपना लगता है उतना कोई कायस्थ या कहार नहीं, क्योंकि वह उनके साथ रोटी-बेटी-व्यवहार नहीं कर सकता। इसलिये जात-पातको बनाए रखकर एक सुदृढ भारतीय राष्ट्र के स्वप्न देखना मूर्खोंके स्वर्गमें विचरनेके समान है। जात-पातकी महाव्याधिसे हिन्दुओं को जितना शीघ्र छुटकारा मिले उतना ही भारत-भूमि का अहोभाग्य है।

तथाकथित उच्च वर्ण के कुछ अदूरदर्शी और जन्माभिमानी लोग, यूरोप और अमेरिका आदि संसार के दूसरे देशों को न देखकर कहा करते है कि हिन्दुओं के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र वर्ण गाय, भैंस, सिंह और गीदड जैसी भिन्न-भिन्न जातियाँ है और विद्वान, शूर-वीर और ऊँचे चरित्रवाले व्यक्ति केवल ऊँचे वर्ण कहलानेवालोंमें ही पैदा हो सकते हैं···और कि शूद्र-जाति कोई महापुरुष उत्पन्न नहीं कर सकती, उनकी इस भ्रांतीको दूर करनेके लिये कुंकोली, गोवा के प्रौफेसर श्री रामप्रसाद सैनी के "हिन्द देश" के मई १९६७ के अंक में प्रकाशित लेखसे लेकर कुछ ऐतिहासिक घटनाएँ उद्घृत की जाती हैं। वे लिखने हैं :—

" इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज का कोइरी, काछी, पासी, चमार, कुम्हार, नायी, तेली, कहार, सुनार, बढई, लोहार, अहीर, कुनबी, सैनी, माली, कलवार, दुसाध नट, भंगी, बंजारा, जातियाँ भले ही आज कितनी ही बिगड गई हों पर भारतीय संस्कृति, कला, वस्तुकला, दर्शन व भाषा–लिपि के आदिम निर्माता ये ही लोग हैं ।

भारत के आदि कवि कौन थे ? निषाद या चाण्डाल । व्यास महाभारत के निर्माता, मल्लाहिन के पेटसे पैदा हुए थे । कालिदास जातिके अहीर थे, जिनको ब्राह्मणोंने वादमें ब्राह्मण घोषित कर दिया । भगवान पाणिनि, संस्कृत का व्याकरण जिनके नाम पर चलता है, जातिके बनिए थे । ऋग्वेद में पणि नाम की अनार्य बनिया जातिका वर्णन मिलता है । उसी जाति से वे संबधित थे ।

आचार्य चाणाक्य, जिनका नाम विष्णूगुप्त कौटिल्य था, जातिके हलवाई या भडभूंजा थे । चणा (चना) संबंधी कार्य करनेके कारण उनका नाम चाणाक्य पड गया । ब्राह्मणोंने द्वेष से उनका नाम कौटिल्य (टेढ़ा या वक्र) रख दिया । यही कारण था जो उसने चन्द्रगुप्त जैसे शूद्रका मंत्रित्व स्वीकार किया । वे स्वयं बहुत काले, कुरुप और क्रोधी थे । शकहार के कारण उनका नन्द से झगडा हो गया था । शायद चाणाक्य ने अपनी विद्वत्ता को ध्यानमें रख कर अपने को ब्राह्मण घोषित करना चाहा होगा । इसलिये उनको नन्दके दरबारीयों के हाथों अपमानित होना पडा हो ।

रामायण का आदि लेखक कौन था ? – वाल्मीकि, जिन्हें द्विजों ने डाकू घोषित किया । आज पूरे देशमें भंगीसमाज अपने नाम के साथ 'वाल्मीकि' लगाना गौरव समझता है और वाल्मीकिजयन्ती प्रतिवर्ष शानके साथ उनकी स्मृतिको बजाए रखने के लिये मनाई जाती है ।

जब सिकंदरने भारत पर आक्रमण किया तो अम्भी और शशिगुप्त जैसे लोग राज्य–सत्ता के लालच में अपनी मातृभूमि के साथ द्रोह कर रहे थे और साधारण जनता स्वतंत्रता के नामपर मिट रही थी । क्षत्रिय राजा अपने स्वार्थके लिये सिकंदरसे मिल गये । किन्तु हिन्दू धर्म द्वारा अपमानित शूद्रों, जिन्होंने हथियारबंद होना शुरू कर दिया था और अन्य निकृष्ट धर्म-संघोंने सिकंदरका सामना किया । अश्वकों, दहुकों, मालवों, कठों, शिवि, अर्जुनायन और आयुधजीवी जातियोंने, जिनको हीन समझा जाता था, पग–पग पर सिकन्दर का प्रतिरोध किया । तारीफ यहकि ये गणराज्य जो जन–साधारण की सहमति पर चलते थे, उनको कट्टरपंथी लोग नष्ट–धर्म और बर्जनीय कहते थे ।

सिकन्दर को भारतमें नष्ट-धर्म और वजनीय समझे जानेवाले गणों से तो सामना करना ही पडा, इसके अतिरिक्त नन्द की सेनाएँ उसका सामना करने को तैयार खडी थीं यह नन्द कौन था? शूद्र था। सच पुछा जाये तो भारत की एकता और भारतीय इतिहास का पहला सम्राट नन्दही था, जिसने भारतकी शक्तिको बढाया और सिकन्दरको लौटनेपर विवश किया।

पुराणोमें उसे द्वितीय परशुराम भार्गव कहा गया है जो पृथ्वीपर सब क्षत्रियों का अन्त करनेवाला होगा और समस्त भूमिको एक क्षेत्र के अधिकारमें करेगा। नन्द जातिके नाई थे। नन्दों की जाति ही संभवत: उनके जैन धर्म के प्रति झुकाव का कारण थी। नन्द राजाओं के सब मंत्री भी जैन थे, क्योंकि ब्राह्मण-धर्म में शूदों के लिये कोई स्थान नहीं। यदि नन्द न होता तो सिकन्दर की सेनाएँ पटना तक रोंदती चली आतीं। ब्राह्मणी-ग्रन्थोंने इस अच्छाईका तो वर्णन किया ही नहीं, वरन् शूद्र होने के नाते उसकीं बडी निन्दा की। उसके राज्यमें विद्रोह को भडकाया। महापद्म नन्द कितनीही छोटी जातिका क्यों न हो, इससे इंकार नहीं किया जासकता कि वह योग्य मनुष्य था। वह कोई साधारण योग्यताका मनुष्य न था।

चन्द्रगुप्त मौर्य और उसके वंशज सब नन्द-वंश की देन है, परन्तु द्विजगण इतिहासकार उन्हें क्षत्रिय बनानेकी धुनमें मस्त है। कहीं यदि यह सिद्ध हो गया कि वे शूद्र थे। शूद्रोंमें जो युगों-युगों तक की प्रचारित हीनता भरी हुई है वह समाप्त हो जायेगी और वे ऊँची जातियों के एकाधिकार के विरुद्ध उठ खडे होंगे।

चन्द्रगुप्त से लेकर अशोक तक सब ब्राह्मणी धर्म के विरोधी हैं। क्यों? यदि क्षत्रिय होते तो ब्राह्मणी धर्म के अनुयायी होते। परन्तु ऐसा नहीं है। चन्द्रगुप्त जैन होकर मरा और अशोक बौद्ध बना।

ब्राह्मणों की यह विषेशता रही है कि पहले तो विरोध करते हैं। बादमें जब बिरोधी के प्रभाव की वृद्धी देखते हैं तो उसे भगवान या क्षत्रिय घोषित कर देते हैं।

महात्मा बुद्ध और श्रमणों की ब्राह्मणोंने बडी निन्दा की है। बादमें बुद्ध को भगवान का अवतार मान लिया गया। हमारा विश्वास है कि महावीर जैन और गौतम बुद्ध दोनों ही ब्राह्मण धर्म द्वारा प्रतिपादित क्षत्रिय नहीं थे, क्षत्रिय तो वे बाद को घोषित हुए, जब उनके प्रभावमें वृद्धि हुई और राजे महाराजे सब उनको पूज्य मानने लगे। हो सकता है कि उनके अनुयायियों ने उनको श्रेष्ट सिद्ध करनेके लिये उन्हें क्षत्रिय घोषित कर दिया हो।"

व्यवसायोंकी बराबरी

कुछ लोग कहा करते है कि चमार, कुम्हार, लोहार, बढ़ई, जुलाहा आदिका व्यवसाय क्योंकि घटिया है, इसलिये उसे करनेवाले भी घटिया या नीच है। ऐसा समझना भारी भूल है। समाज के लिये सब व्यवसाय समान रूपसे आवश्यक है। यदि लोहार शस्त्र न बनाए तो रण-क्षेत्र में सिपाही कैसे लड़ सके? कोई मनुष्य अपने लिये आपही जूता, कपड़ा, अनाज व बर्तन, आदि नहीं बना सकता। शिल्प-कलाको नीच समझनेका दुष्परिणाम यह हुआ हैं कि हमारा उद्योग-धंधा विदेशोंकी तुलना में बहुत वटिया है। जिस काम के कारण किसी व्यक्ति को नीच समझा जाता हो उसे करनेवाला उस काम को उन्नत क्यों करेगा? फिर आज जूते बेचनेवाला ब्राह्मण तो ऊँचा समझा जाता हैं, परन्तु चमार जातिका सेशन जज नीच है यह कहाँ तक न्याय हैं?

कुछ लोग कहते हैं कि अपनेही रक्तमें विवाह होनेको रोकने के लिये जात-पात बनाई गई है; यह ठीक है कि अपने ही रक्तमें विवाह करना अच्छा नहीं। विवाह जितना भी दूर कुल में हो, उतना ही सन्तान की दृष्टिसे भी अच्छा है। मनु कहता है कि अपनी सात पीढ़ी या कुल छोड़कर बेटी देनी चाहिए, सो ठीक ही है। इन सात का ज्ञान रखना कुछ भी कठिण नहीं। परन्तु एक पंजाब-निवासी टण्डन जातिका खत्री है और दुसरा कोई दो सौ वर्ष से बम्बईमें बसा हुआ टण्डन हैं। वे यदि आपसमें विवाह कर लें तो इसे एकही रक्तमें विवाह कैसे कहा जा सकता है? फिर अनेक गोत्र-नाम ऐसे भी है जो विभिन्न जातियोंमें पाए हैं। उदाहरणार्थ गोहिल राजपूत भी हैं, कुम्हार भी और बनिये भी। मल्ही खत्री भी हैं, कुम्हार भी और जाट भी। ये सब आपसमें विवाह कर लें तो प्रजाजनन-शास्त्र की दृष्टिसे कुछ भी हानि नहीं।

अच्छा यह है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य आदि के लेबल मिटा दिए जायें। पहचानके लिए यदि रखना आवश्यक ही हो तो परमार, पँवार, तालवाड़, रत्न, गोहिल आदि पारिवारिक नाम रख लिए जायें। ये सभी जातियों में पाए जाते हैं। इनमें शर्मा, वर्मा व दास जैसे नामोंसे टपकनेवाली ऊँच-नीच की दुर्गन्ध नहीं।

आप्त वचन

जन्म–मूलक जात–पात जब तक कायम है, देश तथा आर्यों की उन्नति नहीं हो सकेगी। जात–पात छोड़े बिना वर्ण–व्यवस्था का क्रम ठीक नहीं हो सकेगा। आज कल वर्ण–व्यवस्था तो आर्यों के लिये मरण–व्यवस्था बन गई है। देखें इस डाकिनसे आर्योंका पीछा कब छूटता है।

–महर्षि दयानन्द

मैंने अपना यह नियम बना लिया है कि किसी ऐसे विवाह–संस्कार में सम्मिलित न हूँगा और न ही उस जोड़े को आशीर्वाद दूंगा जिसमें जात–पातको न तोड़ा गया हो।

–स्वामी श्रद्धानन्द

एक बात जो हमने स्वराज्य–संग्राम में सीखी है वह यह है कि हमें जात-पात को सर्वथा मिटाकर जन्म की बड़ाई का त्याग कर देना चाहिए। इस युग में हमारा यही धर्म है।

–माली राव जयकर

मैं स्वयं अब्राह्मण हूँ। हम अब्राह्मणोंका यह दृढ़ निश्चय है कि हम जाति-भेद से उत्पन्न होनेवाली किसी बाधाको अपनी सामाजिक और राजनीतिक प्रगतिके मार्गमें खड़ा नहीं होने देंगे। और इस उद्देश्य की पूर्तिके लिये हमने निश्चय कर लिया है की हम उन लोगोंको जो जाति–भेद के पक्ष–पोषक हैं। किसी प्रकारके विशेष अधिकार प्राप्त नही करने देंगे।

–सर शङ्करन नायर

हमारा भारतीय रीति रिवाज तो मूर्खता की पराकाष्ठा है। इसका कोईभी कारण नहीं बताया जा सकता कि माली की लडकी धोबीके साथ विवाह क्यों न करे। या एक कायस्त कानूनदान एक वैश्य कानूनदान की लड़की से क्यों विवाह न करे। हिन्दुओं की दर्शन शास्त्र पर बहुत श्रद्धा हैं। पर इन व्यर्थ के रीत–रिवाजों और रुकावटों में क्या आस्तत्व है? अछूत कहलानेवालों की गिरावट भी भारत का एक कलंक है।

–हरदयाल एम. ए.

जात–पात का बंन्धन हिन्दू जातिके लिये कलंकका टीका है। हिंदू जाति में परस्पर धृणा और द्वेषका प्रचार इसी की कृपा का कुफल है। इसलियें आर्य जाति की उन्नति इस बन्धन के तोडने पर ही अवलम्बित है। मैं ह्यदय से चाहता हूँ कि मण्डल को इस कार्य में सफलता प्राप्त हो।

–नारायण स्वामी

॥ ॐ ॥

गाय और मानवता

लेखक : श्री लालसिंह आर्य
५२, अम्बिका भवन, वाडिया स्ट्रीट, ताड़देव, बम्बई – ४०० ०३४

"जो तुमको काम करना है, पहले तो उसे पूरा ही करो
बड़े ध्यान से इस छोटे से किताब को पढ़ो"

संग्रह कर्ता : हीरानन्द (आनंद) आर्य प्रचारक
निज धाम आश्रम गांधी रोड, उल्हासनगर – ४२१ ००५

जुल्द ५०००] तीसरा छापा [सितम्बर १९७७

(मूल्य २५ पैसे)

From Hiranand
Arya Samaj Santa Cruz

गायत्री या गुरू मंत्र

ओंभूर्भव: स्व: तत्सवितुवरेंण्यं भर्गोदेवस्य
धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात् ॥ यजु: ३६-३॥

अर्थ : सच्चिदानन्द, सकल जगदुत्पादक प्रकाशकों के प्रकाशक परमात्मा के सर्व श्रेष्ठ, पाप नाशक तेज का हम ध्यान करते रहें। वह परमेश्वर हमारी बुद्धि और कर्मों को उत्तम प्रेरणा करे।

भजन

दयामय अब तो लो अवतार।
प्रबल हुआ है असुरों का दल
उनका करो संहार – दयामय ....

१ जब जब होतीं गिलानी धर्म की, हरता हूँ भूभार
अब तो नाथ न भूलो कृपया – अपनाओ इकरार

२. पृथ्वीनाथ तुम्हारी – पृथ्वी करती हाहाकार
गौ ब्राह्मण सबटेर रहे हैं – सुर कर रहे पुकार

३ खीर सिंधु के सोने वाले – जगपति जगाधार
जागो आंख खोल कर देखो – डोल उठा संसार

४. राधेश्याम हटा अंतरपट – दर्शन दो करतार
देखो तो कैसे होता है – निराकार साकार

यह किताब श्रीमती मोहिनी सोभराज बुधवाणी, इन्कलाब प्रिन्टिंग प्रेस, उल्हासनगर ३ (फोन ६६) में छापा और श्री स्वामी विशनदास स्वामी तिलोकदास उदासीन, निज धाम आश्रम, गांधी रोड, उल्हासनगर-५ ज़िला थाने [बम्बई] से प्रकाशित किया।

॥ ओ३म् ॥

गाय और मानवता

मानव समाज के धार्मिक आधार ग्रन्थ वेदों में गाय को अघन्या अर्थात् न मारने योग्य और जानवर न मानकर गाय माता लिखा है। इसके अनेक कारण हैं। जिस तरह मनुष्य का बच्चा माता के गर्भ में नौ महीने नौ दिन रहता है उसी तरह गाय का बच्चा भी गाय के गर्भ में नौ महीने नौ दिन रहता है जब कि भैंस का बच्चा दस महीने दस दिन और बकरी का बच्चा छः महीने रहता है इसलिए भैंस का दूध भारी और देर से हज़म होता है। जबकि गाय का दूध मां के दूध के बराबर और जल्दी हज़म होता है जबकि बकरी का दूध हल्का होने के कारण और भी जल्दी हज़म होता है। परन्तु गाय के दूध के समान गुण किसी दूध में नहीं हैं। जिस बच्चे की मां मर जाय वह बच्चा गाय के दूध पर पल सकता है। बच्चे के पालन के लिए जिन पदारथों की आवश्यक्ता होती है वे सब गाय के दूध में होते ही हैं। गाय का दूध दिमाग़ी शक्ति पैदा करता है। हमारे ऋषियों व महापुरषों ने गाय का दूध पीकर और फल खाकर बड़े-बड़े शास्त्रों की रचना की है इसलिए उनकी स्मरण शक्ति इतनी तीव्र होती थी कि जो कुछ एक बार पढ़ या सुन लेते थे, वह सब दिमाग़ में लिया जाता था और आज हम उनकी सन्तान डाल्डा

चाय, तम्बाकू आदि खाने पीने वाले रात का खाया भी भूल जाते हैं। गाय का दूध शरीर को फुरतिला बनाता है जबकि भैंस का दूध शरीर को भद्दा बनाता है और चरबी बढ़ाता है। देख लीजिये भैंस का बच्चा धीरे-धीरे, सुस्त चाल से चलता है जबकि गाय का बच्चा जन्म लेते ही छलांगे मारता हुआ चलता है इसलिए बैल में शक्ति अधिक होती है। अगर कहीं बैल गाड़ी कीचड़ में फंस जाये तो बैल आसानी से निकाल लेता है परन्तु भैंस को मुश्किल पड़ जाती है।

गाय का दूध, घी, मक्खन, दही छाछ यह सब रोगों को दूर करते हैं हमारे वैद्य भी इन सब बातों का ज्ञान रखते हैं। इसलिए भारत के बाहर अमेरीका, यूरोप आदि देशों में गायें ही पाली जाती हैं भैंसे नहीं पाली जातीं। गाय के गोबर से ग्रामों के कच्चे मकानों को लीपा जाता है और खासकर चौका चूल्हा तो रोज़ाना लीपा जाता है। इसका कारण यह है कि गाय के गोबर में यह गुण है कि वह रोगों के किटाणुओं को मार देता है और दूसरा गुण यह है कि जिस जगह पर गाय के गोबर का लेप किया जाता है उस जगह के आस पास की चारों ओर की सौ-सौ फूट धरती की बिजली लेप वाली जगह पर इकट्ठी हो जाती है और उस पर बैठने वाले को शक्ति मिलती है। इसी तरह गाय का मूत्र भी रोगों के किटाणुओं को मारता है। डाक्टर लोग ज़ख्म को पोटाश से धोते हैं तो यही काम गाय का मूत्र कर देता है

इसलिए हिन्दू धर्म व पारसी धर्म में जन्म से मरने तक घर में होने वालेसब संस्कारों में गाय का मूत्र उपयोग में लाया जाता है। बच्चे के जन्म पर बच्चे व उसकी माता को गौ मूत्र वाला पंचगव्य पिलाया जाता है और पानी में डालकर स्नान कराया जाता है ताकि दोनों ही रोगों से सुरक्षित रहें। मरने पर भी लाश को गौ मूत्र डालकर अंतिम स्नान कराया जाता और लाश रखी हुई जगह पर गाय के गोबर से लेप किया जाता है ताकि रोग के किटाणु मर जायें और घर के लोग सुरक्षित रहें। हमारे मुस्लिम भाई इसका विरोध करते हैं कि उनके यहां इसे बौल व बराज कहा जाता है इसलिए यह नापाक (अपवित्र) है तो उन्हें मालूम होना चाहिये कि मनुष्य के मूत्र व पाखाने में दुर्गन्ध होती है परन्तु गायके गोबर व मूत्र में दुर्गन्ध नहीं होती इसलिए हिन्दुओं व पारसियों में इसे पवित्र माना गया है।

हमारे वैद्य लोग गौ मूत्र को मोटापा दूर करने, चरबी व बल्ग़म की ज्यादती को रोकने के लिये, अफारा, खांसी, बदहज़मी, सूजन, वायुरोग, कुष्ट रोग व फुलबहरी, वायुगोला, पेट दर्द, बवासीर और खुजली, बच्चों का जिगर बढ़ना, स्त्रियों के दस्त होना, मूत्र बंद होना, आंख, मुंह और चमड़ी के रोगों जैसे अनेकों रोगों में उपयोग करवाते हैं और गाय का मांस तो सरासर रोग ही पैदा करता है। दिल्ली के कविराज हरनामदास बी. ए. ने अपनी पुस्तक हिदायतनामा ग़िज़ा (खान पान) में इस

पर खूब प्रकाश डाला है। बम्बई के डेंटल सर्जन डा. के. बी. गुप्ता ने रिसर्च की है कि गाय का मांस सफरा के साथ बल्गम पैदा करता है। इसलिये इसके परिणाम स्वरूप खासकर खून से संबंध रखने वाले ल्यूकोमिया और लिमफोमा नाम के कैन्सर की उत्पत्ति में मदद करता है। स्वर्गीय डा. एस. एज. बहल ने रिसर्च की थी कि गाय के मांस में स्त्री हारमोन्स मिलते हैं इसीलिये यह नपुंसकता पैदा करता है। आज विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि अगर एक गाय या एक बैल का एक वर्ष का मूत्र इकट्ठा करें तो उसमें से ४०० रुपये का कैमिकल निकलता है और गोबर में से गैस निकलती है और जिससे चूल्हा और बत्ती जलती हैं और इसके गैस प्लांट भी बन चुके हैं। १९९८ और १९९९ के दैनिक पत्रों की रिपोर्ट के अनुसार सारे देश की गोवंश का अगर गोबर और मूत्र ठीक ढंगसे इकट्ठा किया जाय तो उसमें से अन्दाज़ ४० करोड़ पौण्ड नाइट्रोजन दो अरब पौण्ड फासफोरस और चार अरब पौण्ड पोटेशियम खाद के रूप में मिल सकते हैं और विदेशी खाद लाने से भारत पर करोड़ों का कर्ज़ा होता है इस तरह गौ वंश से हमें ४० अरब किलोवाट के बराबर शक्ति मिलती है और यह शक्ति २२ अरब गैलन डीज़ल तेल की बराबरी करती हैं। जिसकी कीमत दो अरब पच्चासी करोड़ रुपये हर वर्ष होती हैं। सरकारी गौशालाओं में हर एक गाय बैल पर ३६ रुपये वारषिक खर्च आता हैं इस हिसाब से बेकार जानवरों पर

पर देश को ९ करोड़ ७२ लाख २६ हज़ार चार सौ साठ रुपये हर वर्ष खर्च करने होंगे। जबकि गोबर व मूत्र से हर वर्ष १२ किरोड़ ७२ लाख ३९ हजार दो सौ असी रुपये की आमदनी होगी। इस तरह देश को ३ करोड़ १८ लाख ८ हजार ८२० रुपये की बचत होगी। १९५८ जनवरी में दैनिक पत्रों में अमेरीका के एक खेती विज्ञानिक का लेख छपा था कि फैक्टरियों की खाद में बड़ी भारी खराबी है कि पौधों में दो प्रकार के बैक्टरिया होते हैं, एक वह कि जो पौधों को खाते हैं और दूसरे वह जो पौधे को खाने वाले बैक्टरिया को ही खा जाते हैं अर्थात एक पौधे के शत्रु और दूसरे पौधे के मित्र हुये। यह फैक्टरी की खाद इन मित्र बैक्टरिया को भी मार देती है और फैक्टरी की खाद के कारण धरती की असली शक्ति पौधों को न मिलने से पौधों में पैदा होनेवाला अनाज भीं कम शक्ति वाला होता है इसलिए उस अनाज के खाने वालों में सहनशक्ति नहीं होती हैं। आगे लिखते हैं कि इसी कारण से अमेरिका की धरती खराब हो रही है आगे फिर लिखते हैं कि अच्छी खाद तो गाय के गोबर, मूत्र और वृक्षों के सूखे पत्तों, बची-खुची सब्जियां मिलाकर गहरे गढ्ढों में दबाकर रखने से बनती हैं और भारत देश के किसानों का खाद बनाने का यही तरीका आज तक रहा है। आज भारत में हर वर्ष ३ अरब टन गोबर जला दिया जाता हैं जिससे ३ करोड़ टन खाद तैयार हो सकतीं है।

बैल मनुष्य के लिए अनाज पैदा करने, खेती में हल चलाने, पानी देने, वोझा ढोने, कोल्हु चलाने आदि कामो में आता है और फिर यही गाय, बैल मरने पर अपनी हड्डियां व चमड़ा भी छोड़ जाते हैं जिससे मनुष्य कई आवश्यक्तायें पूरी करता है और पैसा कमाता है। इसलिए हमें अंग्रेज़ी राज्य में स्कूलों की पुस्तकों में पढ़ने के लिए मिलता था कि "धन्य गाय का जाया जिसने सारा देश बसाया"।

पूज्य महर्षि दयानंद सरस्वतीजी ने अपनी पुस्तक गो-करुणानिधि में गाय माता पर खूब प्रकाश डाला है कि अगर एक गाय दो सेर दूध देती है और दूसरीं गाय २० सेर दूध देती हैं तो औसत एक गाय का दूध ग्यारह सेर हुआ और इसी प्रकार का महिने में औसत दूध सवा आठ मन हुआ। एक गाय कम से कम छः महिने तक जब कि दूसरी ज्यादा से ज्यादा अठारह महीने तक दूध देती हैं। इस हिसाब से एक गाय की दूध देने की औसत बारह महीने तक होती हैं इस तरह एक गाय का वार्षिक औसत निन्यानवे मन हुआ, अगर इतने दूध में एक सेर के हिसाब से दो छटांक चावल और डेढ़ छटांक चीनी मिलाकर खीर पकाई जावे जो कि एक मनुष्य के लिए दो सेर पर्याप्त होती है। इस हिसाब से एक दूध देने वाली गाय के एक वर्ष के दूध से एक हजार नौ सौ अस्सी मनुष्य एक बार पेट भर सकते हैं। गाय अपने जीवन में कम से कम आठ बार और ज्यादा अठारह बार बच्चे देतीं है इस हिसाब से औसत तेरह होतीं है जिससे

एक गाय के जीवन भर के दूध से पच्चीस हजार सात सौ चालीस मनुष्य एक बार पेट भर सकते हैं। एक गाय के नसल से छः बछिया और सात बछड़े होते हैं अगर उन में से एक मर भी जाय तो भी संख्या बारह रहती है। इन छः बछियों के दूध से एक समय में एक लाख चौप्पन हजार चार सौ चालीस मनुष्य पेट भर सकते हैं। अब रहे छः बैल तो एक जोड़ी बैल वर्ष मे दो सौ मन अनाज पैदा करते हैं इस प्रकार तीन जोड़ी बैलों ने छः सौ मन अनाज पैदा किया यह छः बैल आठ वर्ष तक काम करते हैं। इन छः बैलों ने आठ वर्षों में चार हजार आठ सौ मन अनाज पैदा किया। अगर एक मनुष्य को तीन पाव अनाज मिले तो इतने अनाज से दो लाख छप्पन हज़ार मनुष्य पेट भर सकते हैं।

इस तरह दूध और अनाज को मिलाकर देखने से अंदाज होता हैं कि अगर गाय की नसल दर नस्ल का हिसाब लगाएं तो बेशुमार मनुष्य पेट भर सकते हैं। और बह क्रम हमेशा ही चलता रहता हैं और गाय के मांस का हिसाब लगायें तो एक गाय के मांस से केवल अस्सी मनुष्य ही पेट भर सकते है और फिर यह क्रम गाय के काटे जाने पर हमेशा के लिए बंद हो जाता हैं। इस लिए इतना बड़ा लाभ छोड़कर थोड़े से लाभ के लिए लाखों गाय बैलों का कत्ल करना महा पाप है यह पाप भगवान के दरबार में कभी क्षमा नहीं किया जायेगा। इन्ही गुणों के कारण गाय को माता

का स्थान दिया गया है और इसे पवित्र माना गया और मारना महापाप समझा गया। हमारी धर्म पुस्तकों में लिखा है कि अगर गाय को हटाने की आवश्यकता पड़े तो कपड़े से मार करहटाना चाहिए। गाय को माता मानने का एक और भी कारण है। हमारे भारत वर्ष में एकप्रथा प्रचलित है कि जिस नन्हे बच्चे की माता मर जाय या माता की छाती में दूध न आता हो तो उसे किसी दूध पीते बच्चे की मां का दूध पिलाया जाता है। इस हिसाब से वह इस बच्चे की दूध मां, बन जाती है और उस दूध मां के बच्चे इस बच्चे के दूध भाई बहिन बन जाते हैं और इस बच्चे की जीवन भर रक्षा करते हैं और यह बच्चा भी जीवन भर उसे मां बहेन और भाई समझता है। सरहद के रहने वाले हिन्दू मुस्लिम पठानों में और भारत के कई प्रांतों में यह प्रथा प्रचलित है। इसीहिसाब से गाय हम सब की माता बन जाती है क्योंकि उस का दूध तो जीवन भर बड़े छोटे सब पीते हैं और बैल को भी भाई का दर्जा दे सकते हैं क्योंकि वह हमें अनाज पैदा करके जीवन देता है जीवन भर हमारी अनेकों सेवाएं करता है। इस चित्र का एक भाग आपके सामने रखा गया है अब दूसरा भाग आपके सामने आज के मनुष्य का इसी गाय माता के उपकारों के बदले में बरताव रखा जाता है दूसरों को मैं क्या दोष दूं। जब कि हिंदूओं को ही देख रहा हूं कि गाय का दूध लेकर उसे बजार में छोड़ देते हैं अब वह गाय बेचारी भूख की

मारी, कूड़े करकट व गन्दगी खाती हैं यहां तक कि विवश होकर पाखाना भी खा रही है और अब यह उसकी आदत बन गई और हिन्दू कहता है कलियुग आ गया ऐसा ही होगा ! इस तरह हिन्दू अपना पाप छुपाने के लिए कलियुग का सहारा ले रहा हैं इस तरह जो गाय परम पिता परमात्मा की ओर से अमृत बनाने की मशीन मिली थी उसे विष बनाने की मशीन बनाकर रख दिया। आप विचार करें कि जा गाय पाखाना खायेगी उसका दूध, तो रोग पैदा करने वाला ही बनेगा इसकी बड़ी वजह हमारी सरकार का गोंचर भूमियां बंद करना और लोगों का अनाज व चारे के बदले में अधिक पैसा देने वाला तम्बाकू लगाना है। इस तरह जब बैल मनुष्य की सेवा करते करते बूढे हो जाते हैं तो फिर यही मनुष्य कसाई को बेचकर पैसा खरे करता हैं और फिर यही मनुष्य कसाई के रूप में अपनी सेवा करने वाले गाय बैल को अपनी सेवा का क्या इनाम देता है इसे दिल थाम कर पढ़ें। स्वर्गीय महात्मा गांधी जी ने अपने पत्र में लिखा था और आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी स्व० स्वामी ध्रुवानंदजी ने कत्ल खाने का आंखों देखा हाल अपने व्याख्यान में वर्णन किया था कि बूचड़ खाने में कत्ल किये जाने वाले गाय बैल हड्डियों का पिंजर होता है उनका चमड़ा निर्बल होता है उसे मज़बूत बनाने के लिए गाय बैल पर बड़ा जुल्म किया जाता है इन्हें रस्सी से बांधकर उनपर ऊपर से उबलता हुआ गर्म

पानी डाला जाता है और डंडे की मार मारी जाती है इन दोनो तरह के कष्ट से उन के अंदर का बचा खुचा खून दौरा करता हुआ चमड़े में आकर चमड़ा सूज कर मोटा और लाल हो जाता है ऐसी हालत में उनके गले पर छुरी चलाई जाती है। गर्भवती गाय का पेट चीर कर उसके बच्चे का चमड़ा निकाल लिया जाता है जिसे गोसिल्ला कहते हैं देहली में इसकी कुछ दुकानें हैं और यह चमड़ा बहुत मेंहगी कीमत पर विदेशों को जाता है और महिलाओं के बैग अर्थात् बटूए इसी से बनाते हैं।

गाय बैल के चमड़े से जिस का नाम काफ और कुर्म लेदर है उसके बूट, सूट-केस आदि कई चीज़ें बनती हैं। बम्बई के देवनार बूचड़ खाने में जानवरों को बिजली का शॉक लगाकर मारते हैं मुसलमानों के विरोध से इसे बंद कर दिया गया है क्योंकि उनके यहां ऐसा करना हराम है! यही नही गाय की ओंतडियां, जीभ, कलेजी, मग़ज़ आदि बंद डबों में विदेशों को जाते हैं और वहां की दवाई कम्पनियों में से दवाईयां बनकर आती हैं और अब यहां भी बन रही हैं। विदेशी नमकीन पनीर गाय की अन्तड़ियों को दूध में उबाल कर बनता है। लंडन में गाय के खून से पौधों को खाद देने के लिए गोलियां बनती हैं। हमारी सरकार बाहर के देशों से खासकर रूस से लाखों बूटों के आर्डर ले रही है जो कि गाय बैल के चमड़े से बनते हैं। रूस की सरकार का यह शर्त है कि जो गाय बैल अपनी मौत मरते हैं उनके चमड़े का बूट

नहीं लेंगे। क्योंकि वह कमज़ोर होता है। जो गाय बैल बूचड़ खाने में ऊपर लिखे तरीके से काटे जाते हैं उनके चमड़े का बूट लेंगे। इस तरह डालर कमाये जा रहे हैं और गौ वन्श ख़त्म किया जा रहा हैं और नये नये बूचड़ खाने और मुरगी ख़ाने व मछली घर खोले जा रहे है। ७-१-७३ के उर्दू पत्र आर्य गज़ट में भारत गौ सेवक समाज के स्वामी गोसेवानंद लिखते हैं कि हमारे देश में पनीर के उद्योग धधों के लिए १४०० टन पनीर के लिए लाखों रुपये का रीनेट बाहर के देशों से मगाया जाता है और अब भारत में भी तैयार होता है और इसकी बम्बई, कलकत्ता बैंगलोर और हरियाना में नेशनल डेयरी करनाल में ब्रांचें हैं। स्वामी जी ने डेयरी को देखा और लिखा कि पहले रीनेट बछड़ों के पेट से निकाला जाता था तो बछड़े मर जाते थे इस पर कर्मचारिथों ने इन्कार कर दीया तो अब बम्बई, बैंगलोर, कलकत्ता में बछड़ों के पेट से निकाला जाता है। आईस्क्रीम में डाली जाने वाली जिलेटिन भी बछड़ों की हड्डियों से निकाली जाती है और कब्ज़ खोलने की दवाई रेनी भी इसी से बनती है इस तरह गाय के अमृत दूध में बछडे के मांस का रस मिला कर खिलाया जा रहा है। हिन्दू जनता को सावधान होना चाहिये। लाखों टन मिली जुली सब जानवरों की चर्बी अमेरिका से आती हैं हम पर पार्लियामेंट में श्री ओम प्रकाश त्यागी जी ने प्रश्न पूछा कि इस चर्बी में गाय और सूअर की चर्बी

होती हैं ? तो उतर मिला कि सूअर की नहीं है गाय की है अर्थात् हमारी सरकार को मुसलमानों की भावनाओं की कद्र हैं लेकिन हिन्दू की कुछ भी परवाह नहीं करता क्योंकि हिन्दू का धर्म केवल पैसा है। हिन्दू ही ज्यादा इसके व्यापार में लगा हुआ है। इस पर बम्बई के डाक वर्कर युनियन के प्रधान श्री कुलकरनी ने पत्रों द्वारा सूचित किया कि बंदरगाहों पर जो चर्बी आती हैं अधिकारी लोग उसका ब्लैक करते हैं और यह चर्बी साबुन कम्पनियों, बिस्कुट और आइस्क्रीम कम्पनियों को सप्लाई की जाती है। पहले हिन्दू साबुन वाले कभी चर्बी का उपयोग नहीं करते थे परन्तु अब बम्बई के बूचड़ खाने से मंगवा रहे हैं उनमें हिन्दूत्व की भावना ही नहीं रही। बम्बई में सिर्फ दो तीन कारखाने रह गये हैं जो तेल का साबुन बनाते हैं। हिंद में हिन्दूत्व की भावना ही नहीं रही इसके स्वाभिमान को ताला लग गया। शादियों में खूब जिलेटन वाली आईस्क्रीम बेची जा रही हैं और मज़े ले लेकर खाई जा रही है। मिलावटिये घी में भी चर्बी मिला रहे हैं और खूब धन कमाया जा रहा है।

" बोलो हिन्दू धर्म की जय "

आज का मनुष्य अपने आपको बड़ा सभ्य मानता हैं और बार बार मानवता की दुहाई देता है अगर एक मनुष्य किसी को पानी पिला दे तो पीने वाला उसको धन्यवाद करता हैं और अगर किसी की कोई चीज़ गिर जाय और

दूसरा कोई उसे उठा देवे तो उसका धन्यवाद मानता है इसी तरह दिन भर कई कारणों से एक दूसरे का धन्यवाद अर्थात् उपकार मानते हैं परन्तु बड़े शोक की बात हैं कि यही मानवता की दुहाई देने वाला मानव, गाय, बैल के उपकारों को कैसे भूल गया? उसका उपकार मानना तो कहां रहा, उल्टे उसपर जुल्म ढाता है। क्या इसी का नाम मानवता है? कि जो गाय इस मानव को और उसकी सन्तान को जीवन भर दूध पिलाती है और बैल अनाज पैदा करके इसी मानव को जीवन देता है और अनेकों सेवाएँ मनुष्य की करता हैं जो अपने मूत्र, गोबर, हड्डी, चमड़े से भी लाभ देता हो उसे ऐसी निर्दयता से कत्ल किया जाय कि जिसे देखकर मानवता को भी शर्म आ जाय। हज़ार लानत है, फटकार है ऐसी मानवता पर। आज का मनुष्य तो मनुष्य ही कहलाने का हकदार ही नहीं। इस दृष्टि से तो इसे राक्षस कहना चाहिये। कल को यह भी होगा कि अपने बूढे माता पिता को भी काट कर खा जायगा। आज इसी मनोवृति का ही फल है, कि आज की सन्तान माता पिता और विद्या सिखाने वाले गुरुओं को भी जूते मार रहे हैं। इसका क्या परिणाम होगा? दिल कांप उठता है। देश वासियों को विचार करना होगा। दूध, घी, निर्धन के लिए तो बंद हो गया बस अब, मांस, मछली, अंडे का प्रचार हो रहा हैं। अब मनुष्य को मनुष्य खाएगा। यही कसर बाकी रह गई है। अगर यही हालत रही तो देश में एकता और शांति कैसे रह सकेगी और छुआछूत कैसे मिट सकेगी। इस

पर बातें तो बहुत लोग करते हैं परंतु किसी ने इसी पर विचार नहीं किया कि छुआछूत कैसे पैदा होतीं हैं, आओ इस पर विचार करें। हिन्दू दों भागों में बंटा हुआ है एक शाकाहारी दूसरा मांसाहारी। शाकाहारी मांसाहारी से ऊपर से भले ही घृणा न करे परंतु दिल से घृणा अवश्य करता है। अब यह दोनों हिन्दू मुसलमान और ईसाई से घृणा करते हैं। क्योंकि वह गाय को काटते हैं और उसका मांस खाते हैं। अब ये चारों चीनी लोगों से घृणा करते हैं क्योंकि ये सब जानवरों का मांस खाते हैं, यहां तक कि चूहे, मेंडक, सांप, बन्दर आदि सब खा जाते हैं। बन्दर को बुरी तरह मारते है उसे एक खम्भे से बांधकर उसके सिर में कीला ठोक देते हैं और उसके चारों ओर खड़े होकर कीला निकाल देते हैं तो लहू निकलता है जिसे नीचे मुंह लगाकर सब पीते हैं और उसे उबालकर बाल नोंच कर उसका मांस खा जाते हैं। चूहे का अचार डालते हैं और चूहे के बच्चों को तों कच्चा ही गाजर मूली की तरह चबा जाते हैं। एक और उनका स्पेशल खाना है जिसे नप्पी कहते हैं। यह कैसे बनती है? इसे पढ़ते पढ़ते आपको घृणा हो जायेगी, उसके लिए जमीन में गढ्ढा खोंद कर उसमें खोखले बांस के टुकड़े डाल कर उसमें पाखाना और मूत्र भर देते हैं अब उसमें कीड़े पैदा होकर बांस के टुकड़ों में घर बना लेते हैं जब वे बड़े हो जाते हैं तो निकाल कर उन्हे खा लेते है। यह नप्पी उनका सब से बढ़िया खाना है। यह बात आर्य समाज के प्रचारक स्वर्गीय पंडित कन्हैयालाल

मिश्र ने बताई थी जो कि प्रचार के लिए कई वर्ष तक चीन में रह चुके थे। एक अंग्रेज़ ने लिखा था कि उसे अपने साथियों के साथ चीनियों की दावत में जाने का अवसर मिला तो मेज़ पर चूहे का आचार दुम के साथ रखा गया था साथियों दे तो बड़े मज़े से खाया परंतु अंग्रेज़ घृणा के मारे बिग़ैर खाये पिये चला गया। अछूत जाति के लोग अपने आप को हिन्दू कहते हैं। कई बौद्ध बन गए हैं परंतु खाते गाय का मांस हैं। इन्हीं कारणों से घृणा पैदा होती है और फिर यही घृणा शत्रुता का रूप धारण कर लेती है तो इसी से छुआछूत अपने आप पैदा होती हैं। इसका दूसरा कारण है कपड़ों और शरीर की सफ़ाई न रख़ना। अगर मैं नहाऊंगा नहीं कपड़े गंदे रखूंगा तो मेरे पास बैठने वाले को दुर्गंध आयेगी तो वह मेरे से दूर दूर रहेगा इन बातों पर कोई विचार नहीं करता और छुआछूत का शोर मचाए जा रहे हैं इन सब बातों को ध्यान में रखकर परिणाम क्या निकलता है। कि इस हालत में देश में एकता कैसे रहेगी और छुआछूत कैसे मिट सकेगी? आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी ने इस काम कों उठाया था उसके बाद आर्य समाज ने भी लाखों को शुद्ध करके आर्य हिन्दू बनाया। गुरूकुलों में शिक्षा देकर अछूतों को वेदों को पंडित बनाया परंतु आज कांग्रेस मे वोट लेने के लिए उन्हें ज्यादा सीटें देने का लालच देकर फिर से अच्छूत बना डाला। किसी भी धर्म के प्रवर्तक ने गाय को मारने और खाने की आज्ञा नहीं दी। आर्य हिन्दू जाति के

धर्म ग्रन्थ वेदों में १३१ जगह गाय को अघन्या अर्थात् न मारने योग्य लिखा है ।

ईसाइयों के धर्म ग्रन्थ बाईबल में लिखा है कि बैल देवता है और जो बैल को मारता है मानो उसने एक मनुष्य की हत्या कर दी । जब्बर ४६-५० मे खुदावन्द का फरमान है कि जो बैल को काटता है वह उस मनुष्य के समान है जो मनुष्य को मारता है। मैं घर का बैल न लूंगा और न तेरे बाडे का बकरा क्योंकि जंगल के सब जानवर मेरे हैं ।

पैगम्बर इस्लाम हजरत मुहम्मद साहिब ने गाय को सब जानवरों का सरदार बतलाया है औंर उसका आदर करने का हुकुम फरमाया हैं और खुद हजरत मुहम्मद साहिब ने अपनी जिन्दगी में गाय की कुरबानीं कभी नहीं की । भारत के समझदार उल्माओं ने गाय हत्या के विरोध में अनेक बार फतवे दिये हैं इस्लाम की धार्मिक पुस्तकों में गाय के दूध को अमृत औंर उस के मांस को विष का दर्जा दिया है। हजरत आएशा साहिब का फरमान है कि गाय का दूध दवा हैं और मक्खन शफा है । और मांस सरासर रोग पैदा करने वाला है। हकीम इब्राहीम जैपुरी जी का कहना है कि तिब की दृष्टि से गाय का मांस जुकाम, कुष्ट रोग, फुल बहरी, दिमागी रोग, पागलपन, जहालत-गंज, पीलिया रोग पैदा करता है। अलामा जलालुद्दीन सयोनी लिखते हैं, गाय का दूध, मक्खन, रोग दूर करने वाला और मांस रोग पैदा करने वाला है । मौलाना नूर बखैर, मौलाना सउद सहादी और श्री इमाम जाफर

ने भी वही शब्द लिखे हैं अर्मी कालेज लखनऊ के प्रोफेसर सैय्यद मुहम्मद सादक के किताब में भी यही शब्द मिलते हैं सब की यही राय है। मुसलमान बादशाहों बाबर, हुमायूं, अकबर जहांगीर के राज्य में गाय हत्या करना राज्य की तरफ से मना थी। हुमायूं के खास मुलाज़िम जोहर को हुमायूं के बारे में कुछ जरूरी बातें फारसी में लिख कर रखी हुई मिली है जिस का अनुवाद मेजर चार्ल्स स्टीवार्ट ने १९०४ में किया। इस किताब के पन्ना १०१ पर लिखा है कि एक बार ईरान जाते हुए हुमायूं को खाने को कुछ न मिला, पड़ाव पर पहुंचने पर उन्हें बहुत भूख लगी उन्हे पता चला कि उनके सौतेले भाई कामरान और उनकी मां का पड़ाव पास में ही था यह जानकर हुमायूं ने अपने एक मुलाजिम को कामरान के पास खाना लाने को भेजा। मुलाज़िम जो खाना लाया उसमें साग़, सब्जी, और गोश्त के पकवान थे जब हुमायूं खाने पर बैठे तो उन्हें शक हुआ कि गोश्त गाय का है। हुमायूं ने हाथ पीछे हटा लिया और पूछने पर जानकारी हुई कि गोश्त तो ठीक गाय का ही है। तो हुमायूं बेचैन हो कर बोल उठा "हाए रे कामरान, तुम्हारे पेट भरने का क्या यही दस्तूर है अपनी पवित्र मां को गाय का गोश्त खिलाता हैं तुझमें इतनी भी शक्ति नहीं कि उसके लिए चार बकरीयां ही खरीद लेता। हमारे वालिद बजुरगबार पिता श्री बाबर की कब्र झाड़ने वालों तक के लिए भी गाय का गोश्त खाना मना है। हमारे वालिद बजुरगवार ने जिस तरह अपने परिवार का गुज़ारा किया, क्या हम चारों लड़के ऐसा नहीं कर सकते!" इन शोक भरे विचारों को

जाहिर करते हुए बादशाह ने खाना उठवा दिया और केवल एक ग्लास शरबत पी कर रात काटी और दूसरे दिन सादा खाना खाया।

अफगानिस्तान के बादशाह और निज़ाम हैदराबाद दक्खन ने भी गाय की कुर्बानी बन्द की थी। अब्दुल मलिक इब्न मरदान के सूबेदार इराक हजाज बिन युसुफ ने भी अपने राज्य मे गाय की हत्या की मना कर रखी थी। नवाब मिरधानपुर नवाब गुड़गांवा, नवाब मुर्शिदाबाद, नवाब मंग्रोल, नवाब दोबाना करनाल–लखनऊ के ६ उल्माओं और मौलाना अब्दुलबारी फ्रंगी महल ने भी गाय हत्या के विरोध में फतवे दिये थे। शरीफ मक्का और शेख कुसुतुनतुनीया ने भी गाय हत्या बन्द कर रखी थी।

पारसी धर्म मे भी लिखा हैं कि उन दुष्ट नर नारियों की आत्माओं ने जिन्होंने पानी में पानी के जानवरों को मारा और हूरमज्द (ईश्वर) के दूसरे पशुओं को कत्ल किया मानों उन्होंने गंदगी खाई। आरद विर्क २० में जो पापी मनुष्य पशुओं, मेढों और दूसरे चौपायों की हत्या करता है उसके अंग अग तोड़कर अलग-अलग कर दिये जायेंगे (आरद १९२। २७४) सिख धर्म में लिखा है कि जो कोई मांस मछली खाता है और नशीली वस्तुओं का सेवन करता है उसके सब पुण्य कर्म बरबाद हो जाते हैं।

भाग मछली सुरापान – जो २ प्राणी खाय।
तीर्थ वृत नियम जितने किये सभी रसातल जाय।

मांस–मांस सब एक है मुरगी हिरनी और गाय।
आंख देख नर खात हैं – ते नर नर्क ही जाय।
जो सिर काटे और का अपना रहा कटाय
धीरे–धीरे नानका बदला कहीं न जाय।
जो बीजे सो उगसी कभहूं न जासी हान
समय पाय फल देत हैं नानक निश्चे जान।

(गुरु नानक साहिब)

अगर हमें देश की एकता और शांति को बनाये रखना है छुआछूत को मिटाना है तो हमें ऐसी झूठी परम्पराओं को और द्वेष पैदा करने वाली बातों को छोड़ना होगा। जैसे हिन्दू दूसरे धर्मों के लोगों की धार्मिक भावनाओं की कदर करता हैं, वैसे ही दूसरे धर्मों के मानने वालों को हिन्दूओं की धार्मिक भावनाओं का मान करना होगा। अगर ऐसा नहीं करेंगे तो हिन्दु सदा के लिए ऐसे लोगों को अपना शत्रु समझेंगे। देशवासियों से मेरी प्रार्थना है कि मानवता के नाते एकता और शांति का ध्यान रखते हुए इस बात का विचार करें तांकि हमारे देश की एकता व शांति सदा के लिए बनी रहे।

गाय की रक्षा की समस्या का समाधान – इसका समाधान तो एक ही है कि हम अपने देश में बड़ी–बड़ी डेरियां वैज्ञानिक ढंग से खोलें। प्रश्न पैदा होता कि इसके लिए धन कहां से आयेगा। तो इसके लिए आपकी सेवा में छोटा सा हिसाब रखा जाता है जिसे मैं अपनी पुस्तक (तम्बाकू और हर प्रकार के नशे छुड़ाने का डाक्टर) में लिख चुका हैं और साथ ही

योजना भी लिख चुका हूं।

जिसके द्वारा हम सारे देश को तो क्या सारे जगत को छुड़ाकर अरबों रुपये बचा सकते हैं। उदाहरण के लिये अगर हम केवल भारत के एक वर्ष के तम्बाकू पर खर्च होने वाला धन इकट्ठा करें तो वह ही अंदाजन बीस अरब रुपया हो जाता है इतने धन से बम्बई के आरे मिल्क कालोनी जैसी आठ सौ डेरियां खड़ी कर सकते हैं और अगर दूसरी अनेक हानि करने वाली बुरी चीज़ों पर बरबाद होने वाला धन बचा कर हर वर्ष इसी काम में लगाते जायें तो कुछ समय में हमारे पास लाखों डेरियां और करोड़ों गायें हो जायेंगी इसका परिणाम यह होगा कि हमारे देश में दूध और घी की नदियां बहने लगेंगी। आज जिधर नज़र करो हमें तम्बाकू, चाय, वनस्पति घी की दुकाने नजर आती हैं तो फिर ऐसी दशा में हमें हर समय दूध, घी दिखाई देगा और जब दूध, घी सस्ता व अधिक मात्रा में मिलेगा तो चाय वनस्पति घी से छुटकारा मिलेगा और दूध, घी, खा पी कर शरीर बलवान होगा और गाय के घी से बड़े रूप में हवन यज्ञ करने से बरसात खूब और समय पर होगी। अनाज व चारा खूब होगा वायु शुद्ध होगी और रोगों से बचे रहेंगे। ऐसी हालत में बड़े-बड़े अस्पतालों, डाक्टरों, औषधियों पर खर्च होने वाला धन भी बचा रहेगा। स्वास्थ्य अच्छा न होने से सुन्दरता बनाने के लिये लाखों रुपयों का सामान-पाउडर, क्रीम, लिपिस्टिक आदि के रूप में खर्च करना पड़ता है तो जब दूध घी

अधिक मिलने पर मुंह पर लाली होगी तो कुदरती सुन्दरता होगी। तो यह लाखों रुपये भी बचे रहेंगे। गाय के गोबर व मूत्र से खाद व करोड़ों रुपये का कैमीकल प्राप्त होगा इस योजना से खोली हुई डेरियों में गाय की सेवा अच्छी तरह होगी तो वह अच्छी हालत में मरेगी। इसलिए मरने के बाद उनका चमड़ा अपने आप बढ़िया मिलेगा। तो फिर उनके चमड़े को बढ़िया बनाने के लिए बूचड़ खानों में उन्हें मारने के लिए निर्दयता नहीं करनी पड़ेगी और जब दूध घी सस्ता और अधिक मिलेगा तो अमृत को छोड़कर मांस कौन खायेगा? जो रोग पैदा करता है और जब रोग नहीं होंगे तो उन दवाईयों की जरूरत नहीं पड़ेगी जो बूचड़ खाने में काटे जाने वाले गाय, बैल और बछड़ों के अनेक अंगों से बनती है और इन पशुओं के अपनी मौत मरने पर उनकी हड्डियां व चमड़ा तो मिलेगा ही। इस लिए आज हमारी सरकार जो करोड़ों रुपये लगाकर बूचड़ खाने खोल रही है उनकी जरूरत नहीं पड़ेगी। डेरियों में चारे के लिए तम्बाकू वाली भूमी में चारा लगा सकते हैं। जो मनुष्य दूध, घी अधिक पीता खाता है वह अनाज कम खायेगा। अनाज की समस्या भी हल हो जायेगी। बूचड़ खाने हमारे देश की एकता में बाधक हैं उनके न होने से एकता भी हो जायेगी और छुआछूत भी मिट जायेगी। दूध, घी, सात्विक वस्तुएं हैं इस लिए हमारी बुद्धि की शुद्धि भी हो जायेगी और हम बुराईयों की ओर न जायेंगे और हमारा काया कल्प हो जायेगा।

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई

आरती

ओम् जय जगदीश हरे - पिता जय जगदीश हरे ।
भक्त जनन के संकट - क्षण में दूर करे ॥१॥

जो ध्यावे फल पावे - दुख बिनसे मन का ।
सुख सम्पति घर आवे - कष्ट मिटे तन का ॥२॥

मात पिता तुम मेरे - शरण गहूँ किस की ।
तुम बिन और न दूजा - आस करूँ जिसकी ॥३॥

तुम पूरण परमात्मा - तुम अन्तरयामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर - तुम सब के स्वामी ॥४॥

तुम करुणा के सागर - तुम पालन कर्ता ।
दीन दयालु कृपालु - कृपा करो भर्ता ॥५॥

तुम हो एक अगोचर - सब के प्राण पती ।
किस विध मिलूं दयामय - तुम को मैं कुमती ॥६॥

दीन बन्धु दुःख हर्ता - तुम रक्षक मेरे ।
करुणा हस्त बढ़ाओ - शरण पड़ा तेरे ॥७॥

विषय विकार मिटाओ - पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ - सन्तन की सेवा ॥८॥

आचार्य धर्मपाल आर्य
9029421718